पं0 रामाश्रय झा की संगीतिक रचनाओं का विश्लेषणात्मक अध्ययन

कु0 मोनिका चन्द्रा,
शोधकर्त्री (संगीत गायन),
एम0जे0पी0 रूहेलखण्ड विश्वविद्यालय,
बरेली उ0प्र0
ईमेलः mk1236332@gmail.com

डॉ0 रूचि गुप्ता
एसोसिएट प्रोफेसर, संगीत विभाग,
साहू रामस्वरूप महिला महाविद्यालय,
बरेली उ0प्र0

Reference to this paper should be made as follows:

कु0 मोनिका चन्द्रा,
डॉ0 रूचि गुप्ता

''पं0 रामाश्रय झा की संगीतिक रचनाओं का विश्लेषणात्मक अध्ययन'

Artistic Narration 2020,
Vol. XI, No. II,
Article No. 19 pp. 116-122

https://anubooks.com/artistic-narration-no-xi-no-2-july-dec-2020/

सारांश

किसी भी कला व विषय की यह आवश्यकता होती है, कि समय–समय पर परिस्थिति, काल, समाज, प्राणी की रूचि के अनुसार उसमें परिवर्तन कर उसे परिष्कृत व परिमार्जित किया जाता रहे। जिससे वह कला प्रत्येक जन के संदर्भ में सरलता से साधारणीकरण के सिद्धान्त का अनुसरण कर सके। इस कार्य में सबसे महत्वपूर्ण कार्य व भूमिका उस कला व विषय के प्रवर्तककर्ताओं की होती है। जो कला और मानव बुद्धि के मध्य सामजस्य को अक्षाणु बनाये रखते है। इसी प्रकार संगीत के क्षेत्र में भी कला के निरंतर संवर्धन एवं समृद्धता को उन्नत बनाये रखने में संगीत वाग्गेयकारी की अहम भूमिका रही है। इस क्षेत्र में ऐसे अनेक सुप्रसिद्ध संगीतज्ञ वाग्गेयकार हुए है। जिन्होंने अपनी कलात्मकता से सांगीतिक रचनाओं के माध्यम से सतत इस क्षेत्र को समृद्ध किया है। इन्हीं में से एक सुप्रसिद्ध नाम पंडित रामाश्रय झा जी का भी है। पंडित भोलानाथ भट्ट के सुयोग्य शिष्य व इलाहाबाद विश्वविद्यालय के शिरोमणि कलाकार व आदर्श शिक्षक पंडित रामाश्रय झा की उपलब्धियाँ जितनी असंख्य, असाधारण है उतनी ही रोचक भी है, क्यूँकि संगीत के माध्यम से युवा पीढ़ी को सुसंस्कारिक करने का कार्य प्रत्यक्ष व सैद्धान्तिक रूप से पंडित जी द्वारा ही किया गया है। जो उनकी कृति संगीत रामायण के रूप में व्यक्त हुआ है। भारतीय संगीत में पंडित जी ने अपने शब्द रचना, स्वर रचना, ताल नियोजन, छंद विधान, अलंकार वैशिष्ट्य, भाषा प्रयोग, वर्ण–विषय की विविधता एवं उनमें स्वर संयोजन की परिपक्व एवं बौद्धिक व्यवस्था द्वारा अपने कृतित्व का अद्भुत व असाधारण योगदान प्रदान किया है।

प्रस्तावना

संगीत के प्रति गंभीर, शिष्यों के प्रति उदार व आध्यात्मिक प्रवृत्ति के पंडित रामाश्रय झा प्रतिभासम्पन्न गायक, कुशल वादक व उत्तम श्रेणी के असाधारण रचनाकार होने के साथ–साथ उत्कृष्ट लेखक एवं शास्त्रज्ञ भी रहे। जिसका प्रमाण उनकी लिखी पुस्तक ''अभिनव गीतांजलि'' पाँच भागों में प्रकाशित है। पंडित जी द्वारा इस पुस्तक माला में डेढ़ सौ प्रसिद्ध एवं अप्रसिद्ध रागों का विशद विवेचन एवं नई तथा पुरानी बंदिशों का अभूतपूर्व संकलन प्रस्तुत है। आपने चारों पट की गायनशैली में अपने ''रामरंग'' उपनाम से प्रचलित तथा अप्रचलित रागों में साहित्य–संगीत की दृष्टि से उच्च कोटी की लगभग दो हजार बंदिशों की रचना की। जो ना केवल संपूर्ण भारत में प्रचलित रही बल्कि वर्तमानिक समय में भी संगीत के प्रतिष्ठित कलाकारों द्वारा निरंतर सम्मानपूर्वक गायी भी जाती रही है। इसके अतिरिक्त भजन और लोकगीतों की गायनशैली में भी मौसमी गीत जैसे – चैती, होरी, कजरी इत्यादि गीतों की भी आपने अनेक रचनाएँ निर्मित की है, जो साहित्य एवं भाव की दृष्टि से अत्यंत ह्रदयस्पर्शी है। पुस्तक लेखन कार्य के अन्तर्गत ही आपने इलाहाबाद विश्वविद्यालय में लम्बी सेवा के उपरान्त आपने संस्थागत शैक्षिक सेवानिवृत्ति के उपरान्त हनुमान जी की कृपा से ''संगीत रामायण'' नामक पुस्तक की रचना की। आपने इस पुस्तकमाला को गोस्वामी तुलसीदास जी के रामचरित्रमानस को आधार मानकर इसके सातों काण्डों को प्रसंगानुसार धुपद व ख्याल गायनशैली की कविताओं में स्वरबद्ध किया है। इस पुस्तकमाला में आपने लगभग पांच सौ रचनाएँ प्रस्तुत है। जो पूर्णतया राग–तालबद्ध है और जो संगीत की समस्त कृतियों में सबसे श्रेष्ठ कृतियाँ में से भी है। आपकी बंदिशों के संदर्भ में आपकी सुयोग्य शिष्या एवं राग मल्हार दर्शन व राग शास्त्र पुस्तकमाला की उत्कृष्ट लेखिका गीता बनर्जी कहती है कि ''गुरूजी की आवाज लगाने की क्रिया, बंदिशों में शब्दों का चयन एवं उनकी रचना लौकिक और पारलौकिक दोनों nf"Vl smRÑ"V Fkh] ftl s"kCnks}kjkdg ikukvl EHko gS"1 पंडित रामाश्रय झा जी आपने ''सांगीतिक कार्यो जैसे–रचनाएँ करना एवं लेखन कार्य के लिये पंडित भातखण्डे जी को प्रेरणा स्त्रोत मानते थे। पंडित जी ने सैकड़ों रचनाएँ की तथा उनका साहित्य पक्ष भी अत्यंत प्रसंशनीय रहा, तो इसके अनेक कारण पंडित जी ने स्वयं बताये है। प्रथम तो यह कि यह सब ईश्वर प्रदत्त होता है फिर वह गुरू कृपा को मानते थे। फिर उनका मानना था कि जिसे अधिक से अधिक पुरानी रचनाएँ याद होंगी वह नई रचनाएँ भी बना सकता है। जहाँ तक साहित्य का प्रश्न है तो उन्होंने हिन्दू शास्त्रों का गहन अध्ययन किया है। जैसे – रामचरित्र, कृष्णचरित्र, तो इन शास्त्रों के अध्ययन ने पंडित जी के साहित्य पक्ष को उत्कृष्ट कोटि की श्रेणी में लाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है।''[2] वैसे तो पंडित जी को आपने माता–पिता जी द्वारा सांगीतिक व आध्यात्मिक वातावरण प्राप्त हुआ परन्तु फिर भी पंडित जी के एक मित्र एस.एन. वर्मा के अनुसार पंडित जी को रचनाएँ करने की प्रेरणा उनके नाटक कंपनी में कार्यकाल के दौरान मिली थी। अतः इस प्रकार वैसे तो संगीत के महान ऋषि एवं राम के परम भक्त पंडित झा जी भौतिक जगत को तो छोड़ चुके है, परन्तु फिर भी अपने सांगीतिक, धार्मिक एवं सामाजिक कार्य के लिए वे हमेशा अमर रहेंगे एवं याद किये जायेगें।

बहुमुखी प्रतिभा के धनी पं0 रामाश्रय झा उत्तम श्रेणी के वाग्गेयकार, श्रेष्ठ शास्त्रकार, आसाधारण गायक कलाकार होने के साथ–साथ एक कुशल वादक भी रहे। जो अपनी संगीतिक सेवाओं

के लिये राष्ट्रीय–अर्न्तराष्ट्रीय स्तर पर अत्यधिक सुप्रसिद्ध हुये। संगीत मर्मज्ञ, श्रेष्ठ वाग्गेयकार व प्रकाण्ड संगीत शास्त्रकार के रूप में पं0 रामाश्रय झा की रचनाओं का साहित्यिक व संगीतिक सौष्ठव जितना मनोरंजक है उतना ही रोचक भी है। आपकी रचनाओं में संगीत को सभी तत्वों का संतुलित व सुनियोजित उपयोग देखने को मिलता है। अपनी रचनाओं में आपके शब्द रचना, स्वर रचना, ताल–नियोजन, छंद–विधान, अलंकार, भाषा प्रयोग, वर्ण्य–विषय की विविधता एवं स्वर संयोजन आदि को विशेष महत्व दिया। वैसे तो आपने अपना सांगीतिक ज्ञान किसी घराना पद्धति के अन्तर्गत प्राप्त नहीं किया, परन्तु आपने पं0 भोलानाथ भट्ट, किराने घराने के हबीब खाँ, ''इलाहाबाद के बी0एन ठकार'' जैसे उत्कृष्ट घरानेदार गुरूओं से संगीत का ज्ञात अर्जित किया। इसी के साथ–साथ अपने संगीत की प्रारम्भिक शिक्षा अपने पिता पं0 सुखदेव झा व चाचा मधुसूदन झा आदि से प्राप्त की।

आपने साहित्य और संगीत के गहन अध्ययन को अपनी उत्कृष्ट कृति के रूप में 'अभिनव गीतांजलि' में अपने 'रामरंग' उपनाम से दो हजार से भी अधिक बंदिशें प्रस्तुत की है। जिसमें आपकी अद्भुत सांगीतिक क्षमता, कुशलता एवं मौलिकता के दर्शन होते है, साथ ही आपकी आध्यात्मिक रूचि व वैज्ञानिक दृष्टिकोण का भी पता चलता है। आपकी रचनाओं में आपने साहित्यिक पक्ष पर विशेष ध्यान दिया है। आपकी बहुमूल्य कृति अभिनव गीतांजलि के पहले तीन भाग क्रियात्मक संगीत पर आधारित है। जिसमें आपके द्वारा विशेष रूप से रागशास्त्र पर विशद विवेचन प्रस्तुत किया गया है तथा विभिन्न गायन शैलियों में नई व पुरानी बंदिशों को भी प्रस्तुत किया गया है एवं चौथे भाग की कुछ अलग विशेषता रही है। इस भाग में रागों का विस्तृत विवेचन होने के साथ–साथ रागांग पद्धति का भी वर्णन है। साथ ही रागताल सागर भी प्रस्तुत किया है जो 11 राग व 11 तालों में सुबद्ध है –

''निरत त्रिताल हरि राधे संग, जमुना के तट निकट कदम्ब।
एक–एक गोपी ता बीच श्याम, निरखे हरि मुरत नैना अविराम।
शरद शशि निरख मन–सुख भयो, आनन्द उमग्यो तन को ताप गयो।
नाचत दय दय विविध ताल, ताता थइया थइया बेहाल।
रास रसिक सखिन संग, बसन पहिर विविध रंग।
मुरली बजावे मधुर धुन, मोहे सकल जन सुन सुन।
निरतहु हम संग हम संग निरतहु, कहत गोप वधू ब्रज राज मानहु।
नटवर श्याम नटत सखिन संग, उमगि उमगि अनेकन ढंग।
निरतत शिव गोपी भेष धरे, डमरू बजावे गोपी भेश धरे।
नटराज भूले तांडव रंग, निरतत गोपी कान्ह संग।
कैलाश पति महेश्वर, भये गोप पति गोपेश्वर।
निरखि रास भये भानु मूरत, गये बिसरि अपनो काज उदय–अस्त।
राधे गोपी श्याम रंग सब रंगे, 'रामरंग' ऐसो रास रस पगे।''

गीतांजलि के पाँचवे भाग को दो अध्यायों में प्रस्तुत किया गया है। जिसमें प्रथम अध्याय में बेसिक एवं रागाग रागों को व द्वितीय अध्याय में अप्रचलित मिश्र संकीर्ण व कुछ नवीन है। रागों के केवल

स्थायी–अन्तरे प्रस्तुत किये गये है।

आपने अपनी स्वरचित वंदिशें में ब्रज भाषा, अवधी, मैथिली आदि भाषाओं का प्रयोग बहुधा किया है तथा तरानों में संस्कृत भाषा का भी प्रयोग किया है बृजभाषा में निम्न उदाहरण आपकी भाषा कुशलता का स्पष्ट परिचायक है।

"मुरकाई मोरी बैया छैलवा, ने कीन्हीं झगझोरी
मग बिच बरजोरी धरि बहिया मरोरी मै तो लाज मुरझाई।
नन्द ललन को चलन है अजवरी हो मोरी 'रामरंग' की रंग की बिनती
कर–कर हारि नाहिं मानत कन्हाई ।"

आपकी रूचि आध्यात्म के प्रति विशेष थी। परिणामस्वरूप आपने अपनी अधिकांश बन्दिशों में ईश्वर का गुणगान, शिव, विष्णु, राम और कृष्ण की महिमा का बखान किया है। जो भक्ति भाव से ओत–प्रोत है। इसके अतिरिक्त देवी–देवताओं एवं नायक–नायिकाओं के जीवन–चरित्र सम्बन्धित तमाम विषयों, पर चर्चित सुन्दर बन्दिशों को भी अपने प्रस्तुत किया है। इसी सन्दर्भ में निम्न उदाहरण आपके ईश्वर प्रेम व निष्ठा के मनोरम स्वरूप को दर्शाता है

"सूरत धरो मोरा मनवा नन्द नन्दन चरनन को
तेरो ताप मिटे नित नाम कहो। ज्ञान सुजान गणेश रटे,
शिव सनकादि शेष भेजे रामरंग ध्यान दे सीख सुनो।।"

आपकी बंदिशों में अनुप्रास, यमक, रूपक अलंकारों का सुन्दर प्रयोग प्रचुर मात्रा में हुआ है। जिसमें अनुप्राास अलंकार व यमक अलंकार का उपयोग शब्दालंकार के अन्तर्गत एवं रूपक अलंकार का उपयोग अथलंकार के अन्तर्गत हुआ है। प्रस्तुत उदाहरण यमक अलंकार के अन्तर्गत राग शुद्ध सारांग में त्रिताल निबद्ध है जो इस प्रकार है –

"बीते दिन आवत के री अजहुँ न आये कित
बिलमाये, गिनत मैं हारि हारि हारि
प्रीत लगाय सुरत बिसारी निपट अनारी रामरंग
ऐसे ललन पे वारि वारि वारि ।।"

आपकी सभी बन्दिशें छन्द पर आधारित है तथा एक कुशल कुट्टिकार के गुणों को स्वयं में सिद्ध करते हुए आपने रामायण की प्रसंगवत चौपाइयों को जोकि पूर्णरूप से छन्द बद्ध है, को संगीत की धुपद–श्याल गप्पन शैलियों में सुबद्ध ताल योजना के साथ प्रस्तुत किया है। इसके साथ ही भक्ति रस व श्रंगार रस के अन्तर्गत संयोग एवं वियोग दोनों का ही सुन्दर समायोजन आपकी बंदियों में पाया जाता है। उक्त उदाहरण भक्ति रस में आपकी उपदेशात्मक चिन्तन को भलीभांति प्रदर्शित करता है

प्रथम सुमर ले तू शुभ नाम राम सीता।
जितन को जासों सुजस होवे जगत में नवनीत।।
प्रीत बिन वृथा, तेरो जोग जाप पूजा ।
पढ़े का होत भागवत, रामरंग गीत ।।

पं0 रामाश्रय की बंदिशों में बहुधा, त्रिताल, रूपक, एकताल, झपताल, चारताल, धमार, तीवरा, दीपचन्दी, आडाचार ताल में तालबद्ध है तथा उनमें विलम्बित, द्रुतलय एवं मध्य लय तीनों का प्रयोग यथोचित किया गया है। परन्तु अधिकांश उनकी आपकी बंदिशों में मध्य लय का ही भंडारण प्रस्तुत है। गायन शैलियों के अन्तर्गत धुपद धमार, ख्याल, टप्पा, ठुमरी, तराना, चतुरंग, लक्षणगीत, स्तुति श्लोक इत्यादि सभी में सुन्दर रचनाएँ प्रस्तुत है। प्रस्तुत उदाहरण द्वारा मिश्र खमाज (टप्पा) के अन्तर्गत आपकी बंदिश है जो इस प्रकार है –

''बावरा तू कारे काहे मान कही मान मेरो अरे नादान ।
सोच विचार करे ना सबहु मन रामरंग सबै दिन होवे न समान।।''

इसी प्रकार एक अन्य बंदिश भी उल्लिखित है जो राग धानी व त्रितालबद्ध ठुमरी गायन शैली में प्रस्तुत है जो इस प्रकार है –

''मुरकाई काहे कन्हाई मोरी बैया लगर गारी दूँगी।
हजारन बरज न माने मेरो में हारी विनती कर–कर।
अजहूँ करूँ जाप महल नन्द के, माने न तेरो छैल
करे झकझोरी गैल, मैं हारी रामरंग पग धर–धर।।''

आपने रागों का गहन अध्ययन अर्जित किया तथा अपनी पुस्तक अभिनव गीतांजलि में रागांग पद्धति के अन्तर्गत वगीकृत रागों में असंख्य बंदिशों को निर्मित किया। नवीन राग निर्माण में आपने मंगल गूर्जरी, बैरागी तोड़ी, भंखारी, सरस्वती, सारंग, नटनागरी, चन्द्र मल्हार, महेन्द्र मल्हार, अंजनी मल्हार, अंजनी कल्याण, राम कल्याण, कृष्णा कल्याणा, मारूति कल्याणा, केसरी कल्याणा, तिलक मल्हार, देव कल्याण, विष्णु कल्याणा, राम प्रिया इत्यादि तथा मिथिलावासी होने के कारण आपने मिथिला प्रदेश से सम्बन्धित राग तिरभुक्ति और वैदेही भैरव की भी रचना की है, तथा मैथिली भाषा में ख्याल की अनेक रचनायें भी की है जो ''रजयते इति राग'' सिद्धान्त के अन्तर्गत भलीभांति दृष्टिगोचर होती है। अतएव आपकी सांगीतिक उपलब्धताएँ आपकी साहित्य व संगीत के स्वर, लय, ताल, रस, छन्द, अलंकार पर आधिपत्य की परिचयक है।

सत्येन्द्रनाथ वर्मा आपके बन्दिश संग्रह की प्रशंसा में कहते है कि ''शायद यह बात कम लोगों को मालूम होगी झा जी के पास जितनी अपनी खुद की बनाई हुई रचनाएँ और बन्दिशों थी, किसी दूसरे गायक कलाकार के पास नहीं होगी। एक–एक राग में 15 से 20 तक अपनी बनाई हुई रचनाएँ होगी। अधिकतर रचनाएँ और बंदिशें भक्ति और श्रंगार रस में बनी हुई थी। जिनके शब्द और भाब हृदय को छू जाते थे। आश्चर्य होता है जब यह सोचते है कि झा जी की कोई औपचारिक शिक्षा (formal education) नहीं थी।''[3]

अतः पं0 रामाश्रय ने अपनी चमत्कारिक एवं सौन्दर्यपरक बंदिशों के माध्यम से संगीत जगत में अथाह समृद्धता अर्जित की। पं0 रामाश्रय जी किसी भी रचना, को लयबद्धकर रागों की शुद्धता को बखूबी दर्शाते थे। पं0 रामाश्रय जी ने अपनी बंदिशों के माध्यम से न सिर्फ संगीत जगत को बल्कि भावी पीढ़ी को भी बहुमूल्य सम्पदा प्रदान की है

डा0 मुकेश गर्ग के शब्दों में ''उन्होंने बंदिशे रचना के क्षेत्र में कमाल की सर्जनात्मकता दिखाई है। राग की उनकी गहरी समझ तो इसमें सहायक हुई ही उससे भी बड़ी और निर्णयक भूमिका अदा की उनके सांगीतिक सौन्दर्य बोध ने ''रामरंग'' छाप से निर्मित उनकी बंदिशों में आकर्षक विविधता के दर्षन होते है। सांगीतिक भवव्यता लेकर चमत्कारवादिता तक और मानवीय रिश्तों से लेकर प्रकृति के चित्रांकन तक उन्होंने अनेक दृष्टियों से अपनी बंदिशों को सम्पन्न बनाया कि उनके जीवन काल से ही पं0 जितेन्द्र अभिषेकी, वीणा सहस्त्रबुद्धे, उल्लास कशालकर जैसे बड़े–बड़े उस्ताद उनकी बंदिशों को महफिलों में गा–गाकर सम्मान पाते रहे।''[4] आपकी सुयोग्य शिष्य व प्रसिद्ध ख्याल गायिका वीगा सहस्त्रबुद्धे ने तो प्रसिद्ध ख्याल गायिका वीणा सहस्त्रबुद्धे ने तो आपकी कई बन्दिशों को ध्वनि मुद्रित भी किया। तथा यह सब और कुछ नहीं पं0 रामाश्रय झा की बंदिशों का ही सौष्ठव है।

पं0 रामनारायण आपके बंदिश वैशिष्य के लिये कहते है कि ''उनकी बनाई हुई बांदिशों में उनके द्वारा अद्‌भुत कहन एवं प्रस्तुत करने की गूढ़ शैली ने उन्हें अतिविशिष्ट श्रेणी के संगीतज्ञों की पंक्ति में ला खड़ा किया है।''[5] इसी प्रकार आपकी शिष्या वीणा सहस्त्रबुद्धे भी आपकी बंदिशों की प्रशंसा करती है कि ''स्वयं गायक होने के कारण उनकी बंदिशें उन सभी गुणों से पूर्ण होती है जिनकी एक गायक को अपेक्षा होती है। आपकी बदिशों में शब्दों की भरमार नहीं होती। शब्द गाने योग्य गति से आते है बंदिश के स्तर संगीत की भाषा में, जो बात कहते हैं उसी के अनुसार शब्द रचना भी होती है।''[6]

पं0 रामाश्रय झा की अन्य घरानों के सम्बन्ध में भिंडी बाजार घराने की गायकी व उ0 अरमान अली खॉ साहब की उत्कृष्ट बंदिशों के प्रति विशेष अनुराग रहा। आपकी एक प्रखर शिष्या कमला बोस बताती है कि ''उनकी बंदिशों में कई बातें ध्यान देने योग्य है। यदि विलम्बित ख्याल में सवाल है तो छोटे ख्याल में उत्तर। किसी– किसी बंदिश में स्वर तथा शब्द दोनों का स्थान समान रखा है।' जो आपकी रचनात्मक योग्यता को दर्शाता है।''[7]

सत्यादास जी के अनुसार पं0 रामाश्रय झा जी वाग्गेयकार के रूप में ''एक विलक्षण उपजकार थे । उनके लिये किसी भी राग में कोई भी भावपूर्ण बंदिश की रचना करना उनके बाएँ हाथ का खेल था''[6] तो वही एस0एल0 कन्दारा के अनुसार ''झा साहब में रागों की सुक्ष्म एवं सरल विवेचना की प्रतिभा, बंदिश रचने का कौशल और बंदिश को लय में एक–एक मात्रा में गूँथकर कहने की अद्‌भूत क्षमता थी''[8]

अतः इस प्रकार हम कह सकते है कि–पं0 रामाश्रय झा एक ऐसे कुशल शास्त्रकार एवं आसाधारण रचनाकार एवं एक अद्‌भुत प्रशिक्षक भी थे जो अपने विशिष्ट गुणेां के लिए संगीत जगत में हमेशा याद रखे जायेगें।

संदर्भ ग्रंथ

1. MkWeuh'kk "kekZ ifr Hkk dsvusd jax ifMr jkekJ; >k ^*रामरंग*', 2019 पृ0 – 34
2. डॉ0 मनीषा शर्मा, प्रतिभा के अनेक रंग पंडित रामाश्रय झा *'रामरंग'*, 2019 पृ0 – 32
3. पं0 रामाश्रय झा *''रामरंग'*, अभिनव गीतांजलि, भाग – 1–5, 2015
4. पं0 रामाश्रय झा *''रामरंग''*, रामरंग संगीत रामायण, भाग – 1–2
5. डॉ0 गीता बनर्जी, *राग शास्त्र*, भाग – 1–2

6. *संगीत पंत्रिका,* पं0 रामाश्रय झा अंक, जनवरी, 2011 पृ0 – **8**
7. वही, पृ0 – **31**
8. वही, पृ0 – **43**
9. वही, पृ0 – **63**
10. *संगीत कला बिहार*, जनवरी 2018
11. *संगीत कला बिहार*, फरवरी 2011
12. *संगीत पत्रिका*, फरवरी 2009